पूर्ति में कमी तथा वृद्धि – जब किसी वस्तु की कीमत के अतिरिक्त दूसरे अन्य तत्व जैसे आय फैशन आदि में परिवर्तन होती है और इस कारण पूर्ति में परिवर्तन होता है तो उसे पूर्ति की कमी या वृद्धि कहते हैं।

(1) पूर्ति में वृद्धि – वस्तु की कीमत समान रहने पर यदि किसी वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है या कीमत कम होने पर पूर्ति समान रहती है तो इन परिवर्तनों को पूर्ति में वृद्धि कहा जाता है पूर्ति मे वृद्धि दो प्रकार से होसकती है। (i) समान कीमत अधिक पूर्ति (ii) कम कीमत पर समान पूर्ति।

(2) पूर्ति में कमी – वस्तु की कीमतें समान रहने पर यदि किसी वस्तु की पूर्ति कम होजाती है या कीमत बढ़ने पर भी पूर्ति समान रहती है तो इस परिवर्तन को पूर्ति की कमी कहा जाता है। पूर्ति मे दो प्रकार की कमी हो सकती है। (i) समान कीमत पर कम पूर्ति (ii) अधिक कीमत पर समान पूर्ति।

साम्य का सिद्धान्त या बाजार सन्तुलन

सन्तुलन शब्द का सामान्य अर्थ है आराम की स्थिति या फिर दो विपरित शक्तियों के बीच सन्तुलन से होता है।

जब वस्तु की पूर्ति ठीक उसकी मांग के बराबर होती है तभी मांग एवं पूर्ति का सन्तुलन तथा साम्य कीमत का निर्धारण होता है यदि क्रेताओं द्वारा वस्तु की जितनी मांग की जाती है और विक्रेता वस्तु की उतनी पूर्ति नही करते है तो असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न होजाती है अतः वह कीमत जिस पर कि वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति दोनों बराबर होती है साम्य कीमत कहते है। इसको अद्वितीय साम्य की अवस्था कहते है क्योंकि केवल एक ही कीमत के स्तर पर वस्तु की मांग वस्तु की पूर्ति के बराबर हो सकती है।

वोल्डिंग के शब्दों में, "किसी वस्तु के विक्रेता किसी कीमत पर उस वस्तु की जितनी मांग बेचना चाहते है यदि उस कीमत पर उसके क्रेता उस वस्तु की उतनी मांग क्रय करना चाहते हो तो उसे उस वस्तु की साम्य कीमत कहेंगे।" एक उदाहरण के द्वारा इसे अधिक स्पष्ट कर सकते हैं।

आम की कीमत	आम की मांग इकाई में	आम की पूर्ति इकाई में	विशेष विवरण
1	12	0	12 इकाई की अतिरिक्त मांग
3	10	2	8 इकाई की अतिरिक्त मांग
5	8	4	4 इकाई की अतिरिक्त मांग
7	6	6	सन्तुलन कीमत
9	4	8	4 इकाई की अतिरिक्त पूर्ति
11	2	10	8 इकाई की अतिरिक्त पूर्ति

Scanned with CamScanner

इस सारणी से स्पष्ट है कि जब आम की कीमत 7 पैसे है तो आम की मांग एवं पूर्ति दोनों बराबर हैं। अन्य किसी भी कीमत पर या तो मांग पूर्ति से अधिक है या पूर्ति मांग से अधिक है। यदि कीमत सन्तुलन कीमत से अधिक है तो ऐसी दशा में 8 आम इकाइयां बेचने के लिए प्रस्तुत की जायगी जबकि ग्राहक केवल 4 आम खरीदने को तैयार होंगे। अतः दुकानदार के पास 4 आम बिना बिके रह जायेंगे। अतः अतिरिक्त पूर्ति कीमत को नीचे की ओर धकेलगी और कीमत घटकर 7 पैसे हो जायगी। यदि कीमत संतुलन कीमत से कम है अर्थात 5 पैसे है तो इस कीमत पर मांग 8 आमों की होगी। परन्तु पूर्ति केवल 4 आम की ही होगी। ऐसी हालत में कुछ ग्राहकों को निराश लौटना पड़ेगा। वे आम प्राप्त करने के लिए अधिक दाम देने को तैयार हो जायेंगे। इस प्रकार अतिरिक्त मांग कीमत को ऊपर की ओर धकेलगी और कीमत बढ़कर सन्तुलन कीमत 7 पैसे के बराबर हो जायगी। स्थायी कीमत केवल 7 पैसे प्रति आम होगी क्योंकि इसी कीमत पर मांग एवं पूर्ति की मात्राएं बराबर हैं। एक चित्र के द्वारा इसे अधिक स्पष्ट कर सकते हैं

चित्र में मांग एवं पूर्ति रेखा एक दूसरे को E बिन्दु पर काटती हैं, अतः E साम्य बिन्दु है इसे संतुलित कीमत बिन्दु पर मांग एवं पूर्ति बराबर है। यदि कीमत OP_1 है तब इस कीमत पर P_1A मांग तथा P_1B पूर्ति है यह AB अतिरिक्त पूर्ति कीमतों को घटायगी और बिन्दु E पुन प्राप्त होगा। यदि कीमत OP_2 है तब इस कीमत पर P_2D मांग तथा P_2C पूर्ति है यह CD अतिरिक्त मांग कीमत को बढ़ायगी और बिन्दु E पुन प्राप्त होगा। चित्र में SS पूर्ति का वक्र है और DD मांग वक्र है। OX axis पर मांग एवं पूर्ति का दर्शाया गया है और OY axis पर कीमत प्रति इकाई को दर्शाया गया है

Scanned with CamScanner